अम्बरा

अम्बरा

राजदेव मंडल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-30-3

मूल्य: भा. रु.100/-

पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

टाइप सेट- आशीष चौधरी

Distributor *: Pallavi Distributors*, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 9572450405, 9931654742

Ambara: Anthology of Maithili Poems by Rajdeo Mandal

अंजलि भरि साहित्य सुमन

अंजलि भरि साहित्य सुमन लऽ सम्मान करबाक लेल
अहाँ सबहक सम्मुख ठाढ़ छी।

प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ सहयोग कएनिहारक संगे श्री गजेन्द्र ठाकुर एवं
श्री उमेश मण्डलक प्रति हम हृदएसँ अभार व्यक्त करैत छी।

कालक तीव्र गति आ नित नूतन होइत विचारक मध्य हमरा द्वारा
अर्चित-अर्पित पुष्प केहेन अछि तकर निर्णए तँ अहीं सुधी समाज करब।

राजदेव मण्डल

प्रस्तावना

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नै पढ़ैत अछि आ जै भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तै भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड़ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य ? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै ? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक रूपान्तरण कवितामे कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि ! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत ! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गहींर धरि नै उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहरा नै सकत। मनुक्खक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पुछै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरक नीचाँसँ विलुप्त होइत देखै छथि आ तखनहु आँखि मूनि कऽ ओहि सत्यताकेँ नै मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक वाद कवितामे

घोसियाबए चाहै छथि, देशज आ दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ ताहिमे धार नै आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

....
टप-टप चुबैत खूनक बून सँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मन सँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओइ चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै ऐ कविताकेँ। कोन गोलौसीक आ पंथक सोंगर चाही ऐ सम्वेदनाकेँ। तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नै चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नै चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र होअए। नीक कविता कोनो विषएपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कऽ असझाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नै तँ लोक प्रवचनमे ढ़ोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नै तँ मैथिली लेल शिविर लगाबए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नै तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि !

मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ सांस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से नै भेने साहित्य एकभगाह भऽ जाएत, ओलड़ि जाएत, फ्रेम लगा कऽ टंगबा जोगड़ भऽ जाएत। कविता रचब विवशता अछि,

साहित्यिक विवशता। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नै आबए तै लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहए पड़तन्हि।

आ से राजदेव मंडल सतर्क छथि आ तैँ हिनकर कविता-संग्रह अम्बरा एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह बनि आएल अछि।

– गजेन्द्र ठाकुर



राजदेव मंडल-शिक्षा- एम.ए.द्वय, (हिन्दी आ मैथिली), एल एल बी., संप्रति- अधिवक्ता (निर्मली) पता- ग्राम-मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली), जिला- मधुबनी (बिहार), पीन कोड- 847452

अनुक्रम

आह

लिअ पड़त आह
करुणा अथाह
बाहर शीतलता
किन्तु भीतरमे दाह
चारुभरसँ
घेरलक आह
लोक कहि रहल
वाह-वाह
अछि विश्वास
छूबि लेब आकाश
किन्तु पाइर तर अछि
असंख्य लहाश
चिचिआइत दास
तइयो
बढ़ल जा रहल मनक चाह
पार लगाउत कोन नाह
बिनु लेने आह
कि भेटि सकत
वाह-वाह
परंच,
नहि छी लापरवाह
खोजब नवका राह।

ज्ञानक झंडा

अनन्त अभिलाषा
बदलि देलक परिभाषा
आकाश सभ ठाम भरती भऽ गेल
चिड़ै चह-चह
लोग सह-सह
गन्ध मह-मह
अन्न गह-गह
भरल जान-माल
टूटि गेल जर्जर जाल
ज्ञान आब तोड़ए ताल
भागल तंत्र-मंत्र
सर्वत्र चलि रहल यंत्र
आब नहि चलत
अंधविश्वासक हथकंडा
फहरा रहल
विज्ञानक झंडा
चहुँदिश छँटि गेल अन्हार
भऽ रहल जए-जएकार
नित नूतन आविष्कार
अपरम्पार
बना रहल धराकेँ स्वर्ग सन
किन्तु कतऽ सँ आनत
ओहन जन-मन
तइयो लगौने आस
कऽ रहल प्रयास
नहि जानि झंडा आब कतऽ गड़त
कोन नव दुनियाँक खोज करत।

झाँपल अस्तित्व

नहि जानि कहियासँ
चाँपल अछि
हमर अस्तित्व
एकटा आकृतिसँ
झाँपल अछि
कखनहुँ काल
ओ देखबैत अछि त्रास
बारम्बार हटेबाक
हम कऽ रहल छी प्रयास
किन्तु ओ नहि छोड़ैत अदिबास
टकराइत रहैत अछि
हमरा मतिसँ
निर्बाध अपना गतिसँ
देखऽ चाहैत छी हम
सरुप
नहि अछि हुनक कोनहुँ रुप
सुनने छलहुँ हम खिस्सामे
एहन अनजानकेँ
देखि सकैत अछि शीसामे
हम मानैत छी
खास ज्ञानेन्द्रियसँ जानैत छी
भीतरमे ओ लगा रहल अछि फानी
सुनि रहल छी वक्र-वाणी
प्राप्त करबाक लेल उत्कर्ष
करऽ पड़त आब संघर्ष
नहि तँ बना सकैत अछि हमरा जोगी
किन्तु अस्तित्वक लेल अछि
ईहो उपयोगी।

रहब अहीं सभक संग

चिचियाकेँ सोर पाड़ैत
हमर कंठ दुखा गेल
पियाससँ जेना
ठोर सुखा गेल
चारुभर भरल लहाश
कऽ रहल अछि हमर उपहास
कियो नहि सुनैत अछि
हमर अबाज
कतऽ चलि गेलाह
हमर समाज
जरुरी छल
एहि रुढ़िकेँ तोड़ि देब
भविष्यक हेतु
नव दिशा मोड़ि देब
अहाँ सभ तँ अपनहि छी अगाध
अग्रसर होऊ छोड़ू विवाद
नहि रोकि सकत कोनो बिघ्न बाध
हम नहि कएलहुँ कोनहु बड़का अपराध
हेओ एमहर आउ
नहि खिसिआऊ
नहि करब आब निअम भंग
नहि करब अहाँ सभकेँ तंग
लिअ अपन राज
नहि चाही हमरा ताज
नहि बदलब आब अपन रंग
रहब मिलि जुलि सभक संग।

नदीक माछ

नदीक कोखिसँ उछलल माछ
कऽ रहल हवामे नाच
यात्रा पहरक सगुनियाँ
छोड़ए चाहैत अछि जलदुनियाँ
देखऽ चाहैत अछि पवनदुनियाँ
नदीमे रहितो नहि पाबि सकल पानिक थाह
सूखलमे जएबाक हेतु खोजि रहल राह
करऽ चाहैत अछि समाजिक हित
बढ़बऽ चाहैत अछि नव दुनियाँसँ प्रीत
छोड़ि देत अपन पुरान बास
करत आब नव-नव प्रयास
खोजत नव-नव चीज
नव-नव बीज
लाभ होएत आकि हानि
जाँचत
केहेन अछि हवा पानि
रचत नव इतिहास
नूतन चास बास
परन्तु
सुनने छल ओ अपनहि कान
कहने रहथिन बूढ़-पुरान
''कहियो नहि जाइहेँ ओहि दुनियाँ
ओहिठाम भरल अछि खुनियाँ।''
किन्तु
नव अनुसंधान
माँगैत अछि जीवनदान
तखन भेटैत अछि सम्मान
कोटि-कोटिकेँ अन्न प्राण

मुदा ओ अछि अभागल
जलबून्द कड़ी अछि लागल
विफल भेल ओ छल बलमे
पुनः खसल ओहि नदीक जलमे
तद्यपि
बारम्बार कऽ रहल प्रयास
स्पर्शक हेतु मुक्ताकाश
छोड़ि देने अछि मोह एहि जलक
कऽ रहल कर्म चिन्ता नहि फलक।

बाट-बटोही

जाएब ओहि पार
खसौने घाड़
पुरान पहाड़
बरिसोसँ अछि ठाढ़
हमरा मार्गकेँ कएने अवरुद्ध
हड़पल भेल क्रुद्ध
कतेको लगेलहुँ बाँहिक जोर
दुखा रहल अछि पोर-पोर
इंच भरि नहि भेल टसमस
भऽ गेलहुँ हम बेबस
नहि कियो दऽ रहल अछि साथ
पहाड़ीपर पटकब आब माथ
डूबा देबैक हम खूनसँ
अपना घामक बूनसँ
विफल भेल छी देह जर्जर
पाछाँ सुनैत छी असंख्य स्वर
स्त्री-पुरुष, बाल अबाल
आबि रहल अछि तोड़ैत ताल
गाबि रहल अछि समूह गान
पुनः आएल शरीरमे जान
मनमे उठए लागल उफान
कतऽ गेल ओ पहाड़ी
काँटसँ भरल झाड़ी
आहि रौ तोरी ई कोन बात
गड़ि गेल भूमि आकि भागि गेल कात
आकि नभमे उड़ा देलक बसात
मार्ग भऽ गेल तत्क्षण समतल
चल-चल चल-चल
जय हो जनबल
ताकि रहल अछि बटोहीकेँ बाट
नहि कियो लगा सकैत अछि टाट।

सीमा परक झूला

ई जर्जर झूला
लगैत अछि जेना तुला
सीमापर लटकल अछि
पुरान डारिपर अटकल अछि
पेंगापर झूलि रहल छी
आब स्वयंकेँ बिसरि रहल छी
अन्तिम छोरसँ
अपन बाँहिक जोरसँ
लगा रहल छी आस
नहि छी निराश
आस-पास
प्रभातक उजास
कखनहुँ एहिपार
कखनहुँ ओहिपार
बारम्बार
दोहराबैत छी कार्य ब्यापार
कट-कट-कट-कट
टूटि रहल डारि
दैत गारि
तइयो सम्हारि
धरतीसँ नाता जुटि रहल अछि
गाछसँ झूला छूटि रहल अछि
एम्हर आकि ओम्हर खसब
रहब स्वच्छन्द आकि जालमे फँसब
जीएब वा मरब
फेर किएक डरब
चाहे खसब एहिपार
चाहे खसब ओहिपार
रहत इएह धरती
इएह भाव आर विचार
सुख हो वा दुख
रहब अन्ततः मनुक्ख।

चीड़ीक जाति

धायल पाँखि पर
लटकल लहाश
लऽ कऽ पहुँचल
नीड़क पास
ओ जे ओकर नहि
किन्तु ओकरे छल
लहू सँ भीजल तन
कण-कण
सशंकित अछि चीड़ीक मन
तइयो
मातृत्व सिनेह
पियाबए चाहैत अछि
खियाबए चाहैत अछि
लोलमे राखल अहराक दाना
अनजान बच्चा गाबि रहल गाना
पाछू लागल शिकारी
बनल अछि अधिकारी
जेकरा भूखल आँखिमे
तरजू अछि लटकल
स्वादक बैटखारा
अछि मनमे अटकल
एकटा पलड़ामे प्रौढ़गात
दोसरमे अछि नवजात
घायल देह
टुटैत नेह
टप-टप चुबैत खूनक बूनसँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मनसँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

बाढ़िक चित्र-

पहिल

2008 ई0 मे कुसहा -कुसहाक निकट टूटल कोसी बाँध ताहि कारणें आएल प्रलयंकारी बाढ़िक चित्र-

(सघन अन्हार। भयंकर विस्फोटक। चिचिआइत लोकवेद।)

कुसहा कोसीकेँ बाँध टूटि गेल
लोक सबहक भाग्य फूटि गेल
क्रुद्ध कोसी तोड़य ताल
गरजि रहल अछि जेना काल
भासि रहल अछि
घर-दुआरि, जान-माल
स्त्री-पुरुष, बाल-गोपाल
कल-कल, छल-छल
अगाध जलराशि
बढ़ि रहल पल-पल
डुबबैत, भसबैत करैत एकटार
आबि रहल गरजैत कोसीक धार
हे रौ जाग-जाग
जल्दी भाग
तँ बचतहु जान
वैह महरानी बचा सकैत छउ प्राण
बाढ़ि नहि ई अछि महाविनाष
भासि रहल
असंख्य लहास।

(दोसर चित्र- सम्पूर्ण शरीर जलमे डूबल। सिरिफ हजारो हाथ पानिकेँ उपर भसि रहल अछि।)

दुइ बरखक शिशु
मायकेँ लहास पर चढ़ल
जा रहल अछि बढ़ल दूध पिबैत
खेल रहल अछि
झिलहरि
कोसीक भरल धार मे
चिलहौड़ आ कौआ केँ झपट सँ
कखनहुँकाल
विकराल
करुण गीत
फूटि पड़ैत अछि
ओकरा कंठ सँ
केनाक बाँचत एहि चंठ सँ?

तेसर चित्र- (साँझक आगमन। चारुभर करिया जल पसरल।)

मोंटगर गाछ पर
बूढ़ बकोली मड़र
लटकल अछि
डर सँ सटकल अछि
नहि बाँचल एकोटा माल-जाल
आयल ऐहन काल
नहि बाँचल एको घरक चार
डूबि गेल पूरा परिवार
बाँचल अछि वंशक टीका एकमात्र
तीन बरखक पोता
ओकरो कोना बचेताह

नीचा अछि तेज जलधार
ऊपर अछि फणिधर तैयार
शख्त शाखा पर पाइर सम्हारि
एक हाथ सँ धेने डारि
दोसर हाथ सँ पोता कँ बाँहि
कपार पर बाजय कौआ काँय-काँय
गाछक पत्ती सभ साँय-साँय
साँप ससरल बकोली दिश
ओकरा आँखि मे भरल अछि रिस
ओ ताकि रहल अछि बाढ़ि दिश
सर्प निकट फोंफकारि रहल अछि
बकोली थर-थर काँपि रहल अछि
हड़बड़ी मे हाथ ढील भऽ गेल
डूब्बा पानि मे पोता गिर गेल
बकोली कँ भाग्य फूटि गेल
आब ओ कोना जीअत
फाटल मन कँ कोना सीअत
बाढ़िक पानि गोंगिया रहल अछि
बिरिछ पर बकोली बोमिया रहल अछि।

चारिम चित्र- (जनशून्य मे मुईल- माल-जाल, जीव-जन्तुक लहासक ढेरी।)

एकसरि
अर्धनग्न स्त्री
परिश्रान्त
मुख क्लांत
बैसल अछि धारक कात
देह स्नात
जिअत अछि कि मुइल
साइत सोचि रहल अछि इएह बात
एखनहि निकलल अछि

संघर्ष कऽ बाढ़िक धारा सँ
बहराएल हो जेना कठिन कारा सँ
नहि अछि सुधि अपन देह कँ
न गेह कँ
अर्ध चेतन मे डूबल
कि बाजि रहल अछि से नहि जानि
टप-टप
देह सँ चूबि रहल अछि पानि
दूई गोट भक्षक जेकाँ जेकाँ रक्षक
पहुँचि गेल अछि पास
देह सँ चुबैत जल देखि
ओकर बढ़ल जा रहल पियास।

पाँचम चित्र- (कतौ-कतौ उँचगर ढूह पर बाढि सँ बचल लोक सभ बताह जेँका एक दोसर दिष तकैत।)

उँचगर बाँध पर
बाढ़ि सँ बाँचल लोक
सभकँ माथपर नाचैत शोक
आठ बरखक छौंड़ी
धेने अछि एक गोटेक गोड़
आँखि सँ बहैत अछि नोर
''हमर माय-बाप हेरा गेल
भैया पानि मे घेरा गेल
हओ बाप कतऽ जाएब
कतऽ रहब आब कि खायब''
आँखि गुआरि बाजल ओ
''हमर परिवारक तँ अछिए न कोनो ठेकान
ऊपर सँ कऽ रहल छँ तु छान बान्ह
धीरज धर गे अभागल
नऽ तऽ भऽ जेबें निष्चय पागल।''

छठम चित्र- (राहत शिविर। कात-करोटमे ठाढ़ लोक सभ जेना प्राणविहीन भेल।)

ओ स्त्री अछि
कि अस्थिपंजर मात्र
शिशु कें सटौने अपनहि गात
बड़-बड़ा रहल अछि कात हिं-कात
राहत कर्मचारी कऽ रहल काम
ऑफिसर पुछैत अछि कि भेल नाम
ओ कहैत अछि-
हमर बच्चा बेराम
करम भेल बाम
गिलासक घोरल सतुआ चाटि
लेलहुँ काटि
हम तीन दिन
गिन-गिन
नहि अएलाह कोनो सरकार
केकर करब हम जय-जयकार
हमरा पूरा अछि-षक
तू छहक असली ठक
कियक कहैत छहक
खा ले सबटा सतुआ एकेबेर
साँझ मे आबि जेतौ राहत
सेरक-सेर
एखनहि खा 'कें' जान बचा
सरकारक मान बचा
खा ले भरिपेट प्राण बचा
तिन दिन नहि आयल
आब कि आयत
अपन पेट भरत कि हमरा खिआयत
हेओ सरकार अपरम्पार

हम ओहिना नहि फानैत छी
सब किछु जानैत छी
जखन तक सतुआ, तखन तक आस
सधि जाइत सतुआ तँ भऽ जाइत विनाष।

(अन्तमे)

जीनगी जीनगीक कथा बाँचि रहल अछि
भूत भविष्यक छाँह नाचि रहल अछि
काल इतिहास केँ बाँचि रहल अछि
अवगुण आब गुणकेँ झाँपि रहल अछि
सरकार दुःखकेँ नापि रहल अछि।

दिलक बोल

शब्द नहि रहल दिलक बोल
तैं नहि रहल ओकर मोल
औनाइत रहल ओ अपनहि खोल
कतबो करब अनधोल
बजैत रहैत छी अमरीत बोल
भीतर रखने बीखक घोल
नाश भऽ जाएत जीनगी अनमोल
जहिया टघरत बीखक घोल
एकदिन खुगि जाएत सभटा पोल
मुखमे राम बगलमे छुरी
सभ करत तब थुड़ि-थुड़ि
दिलक बोल अछि शब्दक जान
दुनू मिलि देत मान सम्मान। ।

अहिंसक वीर

अहाँ कहैत छी- कायर बनबसँ नीक
हिंसक भऽ जाएब से अछि ठीक
लोग कहत- वाह-वाह
किन्तु हमरा लगैत अछि ई अधलाह
कायर मारि दैत अछि अपने आपकें
दाबि लैत अछि अपन दुख आ तापकें
हिंसा कऽ सकैत अछि दुरजन
हिंसक नहि कऽ सकैत अछि सिरजन
दुनूमे अछि अपन-अपन अवगुन आ गुन
एहि दुनूसँ ऊपर अहिंसक वीर
-धीर- गम्भीर
दृष्टिमे हो आमजनक पीड़।

मनोवांछित चान

दीर्घ कामनाक भऽ गेल अवसान
लगमे अछि बैसल मनोवांछित चान
दमकैत आ गमकैत किशलय समान
किन्तु देखि ओकर मुख म्लान
बिसरि गेलहुँ हम मिलन गान
पसरल नोर आँखि आर मुख
कहि रहल अछि एक-एक दुख
भाग्यसँ भऽ गेल बाइर
फेर ने हुसि जाए पाइर-
शंकासँ भरल ओकर मन
नव स्पर्शसँ कंपित तन
तेँ राखए चाहैत अछि सम्हारि
दूइ बून्न आँखिसँ नोर झड़ल
हमरो तब बाजय पड़ल
धीरज धरू छोड़ू पुरान आस
नूतन अछि सोझा तहिपर करू विश्वास
घुरि अएलहुँ अहाँ अपना घर
हमरा रहैत नहि करू कोनो डर
फुलाएल एक एक अंग
बजैत चलल संग-संग
जेकरा छोड़ि अएलहुँ सेहो छल हमरे घर
नहि छी देवता अहूँ छी साधारण नर
शून्य बाट अछि ताकि रहल
आगूमे अछि धुँध भरल
तइयो ओहिपर चलहिं पड़ल।

परेमक अधिकार

आँखिक भीजल कोर
गिरल दूइ बून्न नोर
जाहिमे देखलहुँ अहाँक रूप
ओहिना स्मरण अछि
दुलहिन बनल ओ रूप-अनूप
कनेक तेज साँसक वेग
नहु-नहु उठैत डेग
नैहरसँ सासुर दिश
हमरा छातीपर फाड़ैत चीस
आँखि बनल भादोक झहरैत मेह
सँगीसँ टूटैत नेह
नहि देखि कोनो उपाए
निशब्द फाटैत हमर हिरदय
कतेक अहाँ सहने रही
बिनु शब्दे कहने रही-
''हमरा दाबने अछि
माए-बाप आर समाज
तैँ होइत अछि लाज
किन्तु अहाँ छी पूरा डेरबुक
पुरूष छी तइयो छाती धुक-धुक
नहि कएलहुँ परेम जेना कएलहुँ चोरि
हमरो जीनगीमे देलहुँ जहर घोरि
प्रश्न उठैत बारम्बार
साहस बिहीनकँ छै प्रेम करबाक अधिकार''
बैसल रहि गेलहुँ पछताइत
जीनगी भऽ गेल अन्हरिया राति
चलैत रहल काल
उठैत रहल मनमे अहाँक सवाल

आइ सुनलहुँ दूटा पाँति भोरे-भोर
आँखिसँ गिरल अन्तिम दू बून्न नोर
कहलहुँ अहाँ-
"बीतल छन केँ आब बिसरि जाउ
जीनगीकेँ दोसर ढँगे सजाउ।"

मधुर गीत

अपनहि छातीमे छुरी मारि
हम काटै छी बपराहैड़
गिर रहल अछि बून-बून
धरतीपर हमर खून
के मारलक एकरा छुरी
ओकरो आइ तोड़ि देबै मुड़ी
लोग सोचैत अछि के छल एहेन मरमी-घाती
किन्तु असलमे छी हम स्वयं आत्मघाती
कतऽ सँ आएत एहेन उक्ति
जे देत हमरा एहिसँ मुक्ति
कतऽ सँ टूटत एहिसँ नाता
स्वंय छी हम एकर जन्मदाता
केना प्रसन्न भऽ नाचैत अछि लोग
हमरा कोन धऽ लेलक रोग
सभटा भेल अभोग
समए भेल जाइत अछि गत
हमरो ताकऽ पड़त ओ पथ
जाहिसँ छुटए बीख भेटए अमरीत
हमहूँ गाएब मधुर गीत।

सिर बिहून धड़

गौँआ-घरुआ आओर बरियात
कियो नहि बुझि रहल अछि बात
किएक नहि वर कऽ रहल सिन्दूर दान
कि कियो कएलक हुनक अपमान
बराती सभ तोड़ए तान
केहेन अछि ओछहा खानदान
बन्न भऽ गेल अछि मंगल गान
सिनूर लेने ठाढ़
दूल्हा भेल अवाक
नाचि रहल अछि माथक चाक
फानि रहल सभ कातहिं कात
कन्याकेँ कहाँ अछि माथ
सिन्दूर कतए देल जाएत
देखतहि तँ सभ गोटे पड़ाएत
सिर बिहून धड़ बैसल अछि
मनमे संशय पैसल अछि
नहि अछि सौंथ नहि अछि मांग
पीने छह सभ गोटे भांग
कियो नहि देखि रहल अछि साइत
सिनूर कतए देल जाएत
बढ़ल जा रहल अन्हरिया राति
एक-दोसर दिशि रहल अछि ताकि
अकचकाइत
गौँआ पुछैत अछि
किएक रुसैत अछि
दूल्हा आर की लेताह
ओझा लेखे गाम बताह।

हथियारक सभा

जमा भेल सभ अस्त्र-शस्त्र
पहिरने अछि खूनियाँ वस्त्र
उच्च आसनपर संच-मंच
बैसल अछि पाँच पंच
सभसँ पैघ कोन हथियार
निर्णय करबाक लेल तैयार
के अछि श्रेष्ठ के अछि हीन
गुण-अवगुणकेँ रहल अछि गिन
कएने होएत जे पैघ संहारक काज
वहए पाओत ई रक्तिम ताज
कतेक बेर भेल अछि प्रहार
कतेक कएने अछि नरसंहार
सतयुगसँ कलियुग धरि
आदिम युगसँ वर्तमान धरि
सभ हथियारक बनल अछि इतिहास
के कतेक बनौलक दास
कतेक के कएलक विनाश
पाषाण, लाठी आर अणुबम
कियो नहि अछि ककरोसँ कम
शक्तिक मदमे सभ रहल फानि
ताल ठोकैत अछि देह तानि
वीर, महारथीक जहिया बनल छलहुँ भक्त
पीने रहि ओहिदिन भ्रिपोख रक्त
सभ बाजए-हम छी जेठ
हमरा सोझा सभ अछि हेठ
पंच बजलाह-
सुनह लगाबह घ्यान
खोलह अपन-अपन कान

तब भेटतह आजुक सम्मान
बिनु देहसँ गिरौने रकत
कऽ सकैत छह दोसर जुगत
आँखिसँ बिनु गिरौने नोर
दोसर तरहें लगा सकैत छह जोर
बिना कोनो दबावकँ जे करबौने होएत स्वीकार
अपन सर्वोतम विचार
बिनु हिंसाकँ जे कएने होएत हृदयपर राज
ओकरे भेटत ई अमूल्य ताज
एखनुक निर्णय इएह भेल ठीक
आगू आएत विचार आओर नीक
पंचक निर्णय सुइन
सभ लेलक कान मुइन
सबहक माथपर गिरल गाज
अहिंसा दिश बढ़ल ताज
ककरो मुँहसँ नहि फुटय बकार
सत्य अहिंसाक जय-जयकार

घातक गंध

आसमानसँ बरसैत आगि
त्रसित जीव रहल अछि भागि
लाल-लाल जेना काल
रुप विकराल
सँ बँचबाक हेतु
आश्रयकेँ अन्वेषणमे
भागि रहल अछि हरिणी
कतऽ भेटत निरापद धरणी
सोचैत मनमे
गहन बनमे
खोजि रहल अछि छाया
बचेबाक लेल कोमल-काया
दौड़ि रहल अछि
छोट-पैघ तरुवरकेँ छाँहमे
सनाहमे
किन्तु गाछ सभसँ निकलि रहल
तीव्र आर मन्द
घातक दुर्गन्ध
ओ सहि नहि पाबैत अछि
किनको कहि नहि पाबैत अछि
जेना बनि गेल जीभहीन
गनि-गनि काटि रहल अछि दिन
किन्तु कहिया तक
काटत झड़क
तैँ ओ जना रहल अछि

आ बना रहल अछि
फेसमास्क आओर छाता
मोकाबिला करत आब ओ ओहि दुर्गन्धसँ
कवच पहिरि ठाढ़ भेल अछि
अपनहि सुगन्धसँ

कुहेसक परदा

कुहिसक सघन आवरणसँ
आवृत भऽ गेल छी हम
निर्जन पथपर
भयत्रस्त भेल
खोजि रहल छी
चिर परिचित मार्ग
गंतव्य प्राप्तिक हेतु
किन्तु दिशा भ्रमित भऽ गेलासँ
ज्ञात नहि भऽ रहल अछि
जे पूरब चलि रहल छी वा पश्चिम
तखनहि
हमरा देहसँ
टक्कर मारैत अछि
तीक्ष्ण प्रकाश
झन-झना उठैत अछि मन
चौन्हिया गेल चक्षु
सँ देखैत छी जे
हमर छाँह
ठाढ़ भऽ गेल अछि
भूत बनि
कुहेसक परदापर
ओ करए चहैत अछि भयभीत
हमरा
किन्तु
इजोत देखा देलक बाट
जे अछि सपाट।

युग्मक फाग-पत्री

(प्रथम)
फगुआक रंग
लागल अंग-अंग
जागल अनंग
अहाँ नहि छी संग।
(द्वितीय)
शीत भागल
बसंत जागल
पिक पागल
कतए छी अभागल।
(तृतीय)
रितुराजक सुमन
झूमैत कण-कण
पिपासित मन
अहाँ छी दुसमन।
(चतुर्थ)
कहने रहि- नहि घबराएब
हम शीघ्रे आएब
आब कतेक कमाएब
ई मधुमास पुनः पाएब।
(पंचम)
परेमक संगहि विरह रहत
जीनगीक संगहि गिरह रहत
आब कतेक मन दुख सहत
आउ न फगुआ की कहत।

आगमन

अहाँक आगमनसँ
अंत भऽ गेल
आँखित पतीक्षा
आस छल आएब अहाँ
किन्तु
नहि जनैत छलौं
आबि सकब अहाँ
एतेक शीघ्र
सोचने छलौं
अहाँक स्पर्श होएत
मृदुल आओर कोमल
मलयानिल सन सुखद
परन्तु
अहाँक अएलासँ
झन-झना उठल
हमर हृदय
किएक तँ
अहाँक आएब नहि अछि सच्चा
कहि रहल गोदीक बच्चा
पतझड़ी जिनगीक आब
हमरा करए पड़त सामना
तइयो अहाँक लेल
कऽ रहल छी मंगल कामना।

जाति

ओ कहलथि-
‘कनेक भऽ जाउ कात
आर दिअ अपन परिचए-पात’
हमरा कहए पड़ल-
अपन नाम-गाम
आओर काम
बजलाह ओ महाशय-
‘हमर आशय
नहि बुझि सकलहुँ साइत
हम पुछै छी जाति’
मूनने अछि ओ नाक
हम भऽ अवाक
निहारि रहल छी हुनक मुख
ओ नहि बुझि सकलाह हमर दुःख।

बदलैत बाट

सोझा राखल दर्पणमे
देखैत स्वयंकेँ
छुटय लागल निश्वास
आ ओहि उच्छावासक भापसँ
बनए लागल दरपन मध्य
नव-नव आकृति
कोनहुँ सुखद कोनहुँ दुखद
जेना,
बर्तमान, भूत, भविष्यक खेतमे
उपजि रहल हो
नव-नव बिम्ब

कोनहुँ कल्पित कोनहुँ स्मृत
....
किन्तु
जठराग्नि तेज भेलापर
बिसरि गेलहुँ अपनाकेँ
निहारब
बिदा भऽ गेलहुँ
भनसा घर दिशि
रोटीक खोजमे।

भितरिया जानवर

बन्हने छी बुद्धिक मजगूत कड़ीसँ
एहि भीतरिया
हिंशक पशुकेँ
तइयो,
कछमछाइते रहैत अछि
कनेको दोग भेटलापर
ठाढ़ भऽ जाइत अछि-फन-फनाक
आ हम उनटे पाएरे
आपस भऽ जाइत छी
पुनः जंगली युगमे
किन्तु
भऽ जाइत अछि
डर.........
स्मरण कऽ
ओहि युगक समस्याक
तँइ आब करए पड़त
सशक्त
एहि कड़ीकेँ

बाउल परक माछ

तप्त रेतपर
फड़फड़ाइत माछ
कानि-कानि
कऽ रहल नाच
रेतापर फाड़ैत चीस
उड़बाक लेल आसमान दिश
ओ उछलि पड़ल
अभागल
देहसँ झड़ए लागल
चाँदीकेँ कण
झूमि उठल
कतेको आँखिक मन
जरि रहल अछि
माछक तन
सुना रहल ओ दर्द भरल
जीनगीक इतिहास
डूबल हम
आनन्द लोकमे
कऽ रहल छी परिहास
कहियो छल नाचैत ओ
स्वजन-परिजनक बीच
जालमे फसा कऽ मछेरा
लओलक तटपर खींच
ओ कानल गिड़गिड़ाएल
किन्तु,
बचाबए लेल
कियो नहि आएल
आब जतए जाएत

नोचत ओकर माँस
छीन लेत चलैत साँस
तइयो
नहि अछि निराश
घेरासँ
छुटबाक कऽ रहल प्रयास
छुटि कऽ जतए गिरल
बाउलसँ चारूभर घिरल
आओर ओ जे छल
जीनगी-जल
सपना भऽ गेल
गरम रेत अपना भऽ गेल।

कांध परक मुरदा

हमरा कान्ह परक मुरदा बाजैत अछि
पुरना गप्प नव अन्दाजे साजैत अछि
कहियो दोस जेकाँ बतियाबैत अछि
कहियो दुसमन जेकाँ लतियाबैत अछि
हम भागए चाहैत छी दूर
किन्तु बेबस, असोथकित देह
भऽ गेल अछि चूर-चूर
कान्हपर सँ एकरा हटाबए चाहैत छी
भार किछु घटाबए चाहैत छी
तीनठाम नहि तँ एकेठाम
पहिले करए चाहैत छी इएह काम
फेकए चाहैत छी कंधासँ
बचए लेल गुलामीक धंधासँ
पिबैत अछि ओ हमर रकत

तइयो बनल छी हम भगत
हमरा चारूभर पसरि रहल बीख भरल दुर्गन्ध
फाटि रहल नाक केहेन अछि भयावह गन्ध
किन्तु ओ हमरा कान्हपर अड़ल अछि
हमरा माँस आर खूनमे गड़ल अछि
मृत आओर जीवन्त लहू मिलैत रहल
फूल कम आ बेसी काँटे खिलैत रहल
सर,
नहि सहब आब आत्मघाती प्रहार
हमर कान्ह आर बाँहि तनि कऽ अछि तैयार
चाहे,
टूटि जाए साँस
बहि जाए खून
उखड़ि जाए माँस
अछि एहन विश्वास
हटत लहास
फैलत उजास।

मिझाइत दीया

भुक-भुकाइत दीपक
सम्पूर्ण शक्तिसँ संघर्षरत
पराभूत करबा लेल
सघनतमकेँ
लगा रहल
देहक बाती
जीनगीक तेल
किन्तु,
अथक प्रयास भऽ रहल फेल
एक रत्तीक बाती
दूइ बून तेल
कतेक कऽ सकत खेल
भऽ रहल अवसानक इजोत
पड़ि गेल जेना अन्हारकेँ नोत
फेर फक्क दऽ मुझा गेल
अन्तिम सन्देश सुझा गेल
प्रभुत्व सम्पन्न पओलक राज
घुप्प अन्हार पहिरिलक ताज
चोर उचक्काक अत्याचार
नहि रोकि सकताह अन्हार सरकार
हे प्रकाश, जुनि खसाउ नोर
आिब रहल अछि नूतन भोर।

हित-अहित

गप्प एकटा गूढ़
कहने रहथि गामक बूढ़
''अपन धीया-पुत्ता जानि
लिअ हमर बात मानि,
साँपक मन्तर आ खाटक बानि
अनकर जीवन अपन हानि''
''सुनू यौ बाबा
हमरो अछि दावा
अनकर हित तँ अपनो हित
दोसराक करब अहित
अपनहुँ भऽ जाएब कहियो चित
पड़ोसिया घरमे जँ लागि जाए आिग
तँ कि हम ओहिठामसँ जाएब भागि
लगत पसाही उड़त कुकवाहा
हमरो घर भऽ जाएत स्वाहा''
उनटा घुमए लागल माथक चाक
भऽ गेलाह ओ अवाक्।

प्रयास

बाँहिक लगौने चुट्टा
उखाड़ि रहल छी खुट्टा
किन्तु नहि अछि ई खुट्टा
भऽ रहल भान
ई अछि बरिसों पुरान
सुखाएल गाछ रोपल
बाउल माटिसँ धोपल
केहेन जाल खिरा देने छी
रोपल गाछमे भिड़ा देने छी
जे अहाँ बूते नहि होएत गारल
से हमरा बूते कोना हएत उखारल
तद्यपि
लगा रहल छी जोरपर जोर
हिलबे करते थोड़बो-थोड़
कतेको जोड़ी आँखि हँसैत अछि
हँसले घर कते बेर बसैत अछि।

ऑफिसक भूत

सभ कुरसीपर भूत नाचैत अछि
ऑँखि आ अँगुरीसँ दाम बाँचैत अछि
कुरसी अछि वएह
बदलैत अछि ओकर मुख
किन्तु नहि बदलैत अछि
हमर दुख
सभ मुखपर अछि ओकरहिं राज
मुँह नहि खुलत तँ होएत कोना काज
कुरसी हो पैघ आिक छोट
कऽ रहल चोट कऽ रहल-चोट
ओ नचबैत अछि ओकरा मनकेँ
शोणित पिबैत अछि साधारण जनकेँ
हेओ समाज
कोना होएत
हमर अटकल काज
अछि विश्वास
लगौने छी आस
आएत कोनो गुणी आर सच्चा दूत
जेकरा देखतहिं भागत भूत
वएह करत सबहक उपकार
भऽ जाएत हमरो उद्धार।

हे प्रकाश, जुनि खसाउ नोर
आबि रहल अछि नूतन भोर।

कठुआएल-रूप

एहि मुरूतकेँ पूजैत
आ गबैत मंगल गान
हम भेलहुँ जवान
मनमे छल पूर्ण आस
भरल आत्मविश्वास
विपत्तिमे होएत सहाइ
दैत रहलहुँ दोहाइ
करैत रहलहुँ जय-जय
किन्तु हिनका सोझेमे
सभ कुछ हेरा गेल
हमरा सँगे भेल अन्याय
ओ देखैत रहल निरूपाय
नहि भेटल मेवा
किएक करब सेवा
थुड़ि कऽ देबै फेक
नहि रहए देबै रेख
क्रोधसँ कँपैत हम
चला देलिएक लट्ठ
हिनका माथपर
आ गातपर
टूटि कऽ भऽ गेल छहोछित हम भेलहुँ आश्चर्य चकित
पर आशाक बीपरित
मुरूतक भीतरसँ
निकलल भयावह रूप
टुकुर-टुकुर तकैत
भेल अछि चुप्प
हमरा दिश देखतहि
ओ लटुआ गेल
लाजसँ कठुआ गेल।

सुनगैत चिनगी

छाउरक ढेरीपर
मिझाइत चिनगी
सोचि रहल अछि
अपना शक्तिक विषएमे
“डाहि सकैत छलहुँ
सम्पूर्ण विश्वकेँ
किन्तु पड़ल छी आइ
उपेक्षित सन
जीबि रहल छी
एहि आशापर
जे उठत जोरगर बसात
करत हमरा साथ
पहुँच जाएव भुस्साक ढेरीपर
आ पुन: लहलहा उठब हम
तखन डाहि देव ओहि महलकेँ
जे रँगल अछि शोणितसँ
खाक कऽ देव ओहि जंगलकेँ
जाहिमे नुकाएल रहैत अछि
कुमंत्रणा करैत हिशंक जन्तु
आ हम अपना धधरासँ लिखब
नभपर नव इतिहास।”

अहाँक अगवानीमे

हम सोचलहुँ-भेल अछि
शुभागमन
किन्तु बसात बनौलक
पदचापक भ्रम
के रोकि सकैत अछि
उड़ैत मनकेँ
फड़कैत तनकेँ
तेँ विवशताबश
बन्न दरबज्जाक-रन्ध्र
बनि गेल-चक्षु
निहारबाक हेतु
चानकेँ
किन्तु डर छल
उमड़त धनकेँ
तइयौ-आसमे डूबल
दिलकेँ थामि
एकटक तत्पर छी
अगवानीमे
परन्तु, भूत बनल जा रहल
वर्तमान
कि पथ अछि कंटकमय
वा दिल पाषाणमय
भविष्यक आगिमे
जरैत मन
नीरीह तन।

महत्वाकांक्षाक गाम

रथासीन भेल छी हम
आ रथकेँ घिंचने जा रहल अछि
वेगयुक्त अश्व
उबड़-खाबड़ सड़कपर दलमलित करैत
भऽ रहल अछि
शीघ्रतासँ अग्रसर
हमरा हाथक कोड़ा
“सट-सट-सटाक”
पड़ि रहल अछि-उज्जर घोड़ाक पीठपर
पड़ाएले जा रहल अछि
लाल रंगक वाहन
शब्द भेल- “धड़-धड़-धड़ाक”
हरियर रंगक पहिया
खसि पड़ल खाधिमे
एखन अछि सुदूर-गन्तव्य
हमर महात्वाकांक्षाक गाम
तेँ फेंकि देलहुँ कोड़ा
लगेबाक हेतु जोर-रथक जुआमे
लगा देलहुँ कान्ह
देखियौ आब तान।

एकटा चुप्पी

ई हमरा पाछू धेने रहैत अछि
छोट आ पैघ भऽ कऽ हरक्षण
उठैत-बैठैत, चलैत-फिरैत, सुतैत-जगैत
देखैत रहैत अछि
हमरा दुष्कर्म आ सुकर्मकेँ
किन्तु किछो नहि बाजैत अछि
सभ हमरा छोड़ि सकैत अछि
परन्तु ई नहि छोड़ता
ई पछुआ भऽ गेल छथि-हमर
किन्तु अन्हारमे गेलापर भऽ जाइत अछि- लुप्त
पुन: शीघ्रे प्रगट भऽ जाइत अछि
पछुआ रहितो ई चुप्पा समदर्शी अछि
एकरा नजरिमे सभ बराबरि
नहि केओ धनीक नहि केओ उँच
नहि केओ गरीब नहि केओ नीच
नहि कोनो नाम नहि कोनो गाम
तैँ हम कऽ रहल छी परनाम।

छड़पटाइत लहाश

अन्हार राति
निर्जन बाटपर पड़ल हमर लहाश
कि जरेबाक वा दफनेबाक नहि छै ओकरा?
कात भऽ कऽ नाक मुँह घोंकचाबैत
किएक पड़ाइत अछि लोक
केहेन संक्रामक अछि रोग
बीतल जाइत अछि राति भऽ जाइत भोर
फेर वएह प्रतिदिनक शोर
पुन: आएत राति
कन्तु हमर ई लहाश
गन्तव्यपर पहुँचत कहिया
कखैन देखत अनचिन्हार असमसानकेँ
जे अछि तैयार कएल गेल
एहि अंत्येष्टि युगक व्यवस्था द्वारा।

रूसल धीया

कथीले एलौं सासुरसँ रूसि
भऽ गेलौं हल्लुक, गप्प छलै फूसि
सासुर बास जीनगीक बास
नैहरक बास चासे मास
असगरे एलौं आब की रहल बाँकी
आँखि उनटबैत बजली लालकाकी-
नहि बाजू ढाकीक ढाकी
नहि सोहाइत अछि चुप रहू काकी
फाटि गेल आब हिया
कनैत बजली धीया
टूटलाहा घर आ तोतराहा बर
थप्पर चलबैमे सभ तुर चरफर
सासु चलाबै ठुनका पति भाँजैत अछि डाँग
केकरा कहबै मोनक बात ससुर पीबैत अछि भाँग
पहिने बचत जान
तबने राखब कुलक मान
कतबो नीकसँ करैत छी काज
तइयो वएह उलहन-उपराग
ई नहि छी हमरा भागक खेल
जानि बुझि पठेलहुँ ओहि जेल
राखि लेलहुँ छातीपर पथ्थल
नहि रखने छी डर
चाहे किछो बितइ
आब नहि जाएब ओहि घर।

बसातक धुजिनी

सदैव ई मकड़ा सभ
बढ़बैते रहैत अछि जालकेँ
आ फँसबैते रहैत अछि
कीड़ा-फतिंगाकेँ
तैयो, भिन-भिनाइते रहैत अछि
निडर भऽ कऽ दू-चारि गोट
आ तेँ फँसैते रहैत अछि
छद्म-चालिमे
ओना ई आवृत रहैत अछि निर्बल
किन्तु, नहि कएलक कहियो
तोड़बाक प्रयास ओ डेरबुक सभ
परन्तु- आइ उठल अछि
पुरबा बसात
आ जोरगर मेघो अछि ओहि कात
आबि रहल गड़-गड़ाइत तोड़ैत ताल
टूटि जाएत आब ई प्रपंची जाल।

अदृश्य आगि-

एहि भीतरिया धधरामे
जरि रहल अछि
हमर ओ आकांक्षाक गाछ
कतेक पैघ भऽ गेल छल
एकर डारि-पात
कतेक झमटगर आ विस्तृत
बुझि पड़ैत छल एकर शीर्ष
भऽ गेल हो गगनचुम्बी
असंख्य लोग बिश्राम पौने हेता
एकरा छाँहमे
किन्तु ई अदृश्य आगिक धधरा
केहेन निर्मम अछि
जे भष्म कएने जा रहल अछि
सौंसे गाछकेँ
नहि अछि अग्निशामक यंत्र
हमरा लगमे
आ जँ रहबो करैत
तैओ नहि मिझा सकितहुँ
जँ मिझायो जाएत
तँ कि भेटैत छाउरक अतिरिक्त।

राजदवे मंडलक दूटा कविता-

तीन मित्रक गपशप

बहुत दिनक बाद मित्र मिलल
तीनूकेँ मनक फूल खिलल
पहिल पूछलक दोसरसँ-
कहू मित्र सुखी छी वा दुखी
उत्तर देलक भऽ कऽ दुखी-
सभ कुछसँ छी भरल-पूरल
सुरा-सुन्नरी रहैत अछि बगलमे पड़ल
तइयो नहि छी सुखी
हरक्षण रहैत छी दुखी
उत्तरदाता प्रश्नकर्ताकेँ दैत गारि
खाली गिलासमे दारू देलक ढारि
हेओ मित्ता हमरेटा नहि सताउ
किछ अहूँ बताउ-
जीनगीक टूटलाहा नाहमे
हरदम रहै छी अभावमे
तैं ने माथ अछि झुकल
ठोर अछि सुखल
दुनू तेसरपर आँखि गड़ा देलक
हाथमे लाल बोतल धरा देलक-
अहूँ किछ बोलू
दिलक बात खोलू-
हम छी मस्त फकीर
नहि अछि कोनो फिकिर
देह आ मोनसँ छी स्वतंत्र
नहि करै छी केकरो बनगी
जी रहल छी अपन जीनगी
नहि छी दुखी
मनसँ छी पूर्ण सुखी

दुनू भेल चकित
मुँहसँ निकलल वाणी-
अहाँ नहि छी साँच
या बजैमे करै छी बेमानी
पशु छी या देव नहि तँ दानव
एहि धरती परक नहि छी मानव।

नव बिहार

बनाएव हम नव बिहार
छूबि लेब सफलताक दुआर
प्राचीण ध्वंसावशेषपर
पूर्व मिलल संदेशपर
रचबाक अछि मजगूत दिवार
सचेत भऽ रखबाक छै ईंटा बारम्बार
कर्मरत हो बाल-अबाल
उन्नत होएत सबहक भाल
सफलता कए रहल पुकार
बनाएव हम नव बिहार
बिच्छिन्न गेहमे तम छिपल अछि
सभकेँ दिलमे गम छिपल अछि
एकरा निकालबाक हेतु भऽ जाउ तैयार
बनाएव हम नव बिहार
पुरान रंग आर संग
सजेबाक अछि हरितिमाक रंग
नव सृजित सज्जित महल भऽ जाएत तैयार
बनाएव हम नव बिहार
सुविचार जन-जन करू
आइ अपना सभ प्रण करू
मिलि कऽ कदम बढ़ेबाक लेल भऽ जाउ तैयार
बनाएव हम नव बिहार।

मुँहझप्पा

एहि मेलामे
कतए हेरा गेलौं मित्र!
खेजैत-खोजैत भेल छी-अपस्याँत
परन्तु अहाँ तँ ओढ़ि नेने छी-मुखौटा
अहाँक चीन्हब भऽ गेल कठिनाह
एहि सम्पूर्ण भीड़मे
मुखौटेधारी छथि-सभगोटे
कऽ रहल अछि काज
मुखैटेक भीतरसँ
आदति पड़ल छन्हि सभकेँ पहिरबाक
आहि, आब नहि भेटत-हमर मित्र
आननपर ब्याघ्रानन लगाकए
ढुकि गेलाह
एहि युगक मुखौटाबला जातिमे
निकलि रहल अछि नोर टप-टप
आँखि भऽ गेल-झलफलाह
बढ़ेलहुँ हाथ
नोर पोछबाक हेतु
फट्ट दऽ ठेकल मुखौटा
अहि रौ तोरी ई कोन बात
भेल संताप
लटकल अछि केहेन खप्पा
हमरो मुँहपर मुँहझप्पा।

टूटल बन्हन

ई भूखल भेड़िया
लेर चुबबैत
एकटक प्रपंची आँखिसँ
ताकि रहल अछि-आहार
आ कऽ रहल अछि-स्मरण
सरस स्वादक
पूर्व प्राइज़ शिकारक सँग
घटित घटनाक चित्र
आबि रहल दृष्टिक सोझा
आ दोगमे छपकल
शिकारी अछि सन्नद्ध
बुद्धिक तीक्ष्ण तीर लऽ कऽ
किन्तु चंचल भेड़िया
कखन मारत हबक्का
तकर अपनहुँ नहि छन्हि पता
जठराग्नि तेज भेलापर
बिसरि जाय छथि
स्वजन-परिजनकँ
मनक बन्हन टूटि सकैत अछि
कखनहुँ
आ कए सकैत अछि-
आधात
चिर संचित पवित्र अंगपर
आ कऽ सकैत अछि विकृत
मनकँ
तैं तेज तीर चलादेब आवश्यक
वा नहि तँ कऽ दियौक
नव आहारक व्यवस्था।

अढ़ाइ हाथक सांगि

कतेक दुख भेल हेतै
बाबूकँ ओहिदिन
भाइ हम जानि रहल छी
याद पाड़ैत तरे-तर कानि रहल छी
हमर बाबू छोड़ि काम
एहिठामसँ कनेक बाम
एकचारि तरमे रहै ठाढ़ ओहिदिन
जहिया हम दुनू भाँइ होइत रही भिन्न
दुखसँ भेल खिन्न।
बजल रही हम-
एगो बेटा तीत
आ एगो बेटा मीठ
चुप रहू अहाँ बाजि नहि सकैत छी
अपन गोटी भाँजि नहि सकैत छी
गप्पक खेती खूब करै छी
चुप्प रहू हरदम बीख बजैत छी
भेलो काजकँ फेर गिजैत छी।
कहने रहथि बाबू-
हेओ बउआ नहि होअ भिन्न
नहि भेटतह पलखति राति और दिन
कपारपर लादल छह कइएक हजार श्रृण
फुटा कऽ बदला लेतह सभ गिन-गिन।
देने रही हम जवाब-
एतेक दिनसँ कि केलहुँ विकास
सभ चीज-वित्तकँ केलहुँ नास
बेचि बिकैन खेलहुँ सभ चास-बास
देखैत छिऐ लाठीक हूर
कऽ देब अखने पेटमे भूर।
आइ हमरो दुनू बेटा भऽ रहल अछि भिन्न
बाँट-बखरा कऽ रहल गिन-गिन

हम कछमछाइत ठाढ़ छी ओहिना
बरिसों पूर्व हमर बाप करैत रहथि तहिना।
बेटा कहैत अछि-
शटअप
मंदिरमे जा कऽ करू जप
केहेन छी अहाँ गार्जियन
कि कएलहुँ उपार्जन
गप्प हँकैत खेलैत रहलहुँ ताश
सभटा पुश्तैनी सम्पतिकेँ कएलहुँ विनास।
ओना आब बजै छी कम
तइओ नोर पोछैत बजलहुँ हम-
कतेकसँ दुसमनी कतेकसँ मेल
कइएक बेर खेललहुँ हुड़दंग खेल
आगू बढ़बाक लेल कतेक कएलहुँ प्रयास
तइओ रहि गेलहुँ पाछू
आगाँ पड़ाइत रहल विकास
हओ बउआ कतेक हमरापर बान्हैत छह झाँगि
सभपर छै अढ़ाइ हाथ साँगि।

कानैत अधिकार

अनुशासनक सीमापर
कतेक कालसँ
बैधानिक अधिकार
रहल अछि कानि
झाँपि रहल अछि
सबकुछ जानि
स्वर दबल सन
देने अछि मानि
भीतरसँ विरोधक
चिनगी निकलि रहल
फानि फानि।

आबद्ध

हमर शरीर
बान्हल अछि कड़ीसँ
कनेको हिलबैत देरी
झन-झना उठैत अछि
ओहि शब्दसँ
मन सिहरि उठैत अछि
केहेन नचार भेल छी-हम
टुकुर-टुकुर तकैत
देखि सकै छी मात्र एकटा सपना
स्वतंत्रताकेँ
कतेक अन्तर अछि
कल्पना आ यथार्थमे
लगा रहल छी
जोरपर जोर-तोड़बाक
नहा गेल छी-घामसँ
नि:सृत केहेन विचित्र गन्ध
निसाँस लेबामे बुझि पड़ैत अछि
कठिनाह
वस्त्र भऽ गेल अछि
गोंत भिज्जू जकाँ
असोथकित भऽ
सोचि रहल छी
निर्माणकर्ता एहि कड़ीकेँ
छी हम स्वयं
तइओ छी असमर्थ-तोड़बामे
बौआ रहल अछि-मन
स्मरणक गहन वनमे
सतत् सचेष्ट भऽ
ताकि रहल छी
कड़ीक कमजोर भागकेँ।

हम पुनः उठब एकबेर

हम पड़ल छी
मृत्यु शय्यापर
चिर रोगाह
छूत व्याधिसँ ग्रसित
मैल वस्त्र फाटल, सड़ल
नीच कुलक
चिर उपेक्षित
देखैत छी जे धर्मराजक आज्ञासँ
आबि रहल अछि
यम हमरे दिश
हमर प्राण निकलिकेँ
ठाढ़ अछि कातमे
थर-थर काँपैत
हम बनि गेलहुँ लहाश
किन्तु यम सब ठमकि गेलाह
हुनका मुखमण्डलपर
घृणा मिश्रित भय छनि
डर किएक से नहि जानि
नाक मुँह सिकोड़ैत
ओ घुरि गेलाह
आ चुपचाप ई खेला
देखि रहल अछि
हमर प्राण
निरूपाय भ' पुनः ओ ढुकि गेलाह
हमरा शरीरमे
आ हम टन-टना क' ठाढ़ भ' गेलहुँ
आब पड़ेबाक प्रयत्न
क' रहल अछि सब हमरा डरे

घृणाकेँ पछाड़ि देलक भय
काँपि रहल छथि
थर-थर डरसँ धर्मराज
बिदा भेल छी आब हम
हुनके सिंहासनकेँ
ओँघरेबाक हेतु
किन्तु कमजोरी सन
बुझि पड़ैत अछि हमरो
तेँ किछु काल ठाढ़ भेल छी
शक्ति संचय करबाक हेतु।

दरपनक स्थिति

जर्जर खूँटी
आइ टूटि गेल
ओहिपर लटकल शीशा
धाँहि द' खसि पड़ल
भ' गेल छहोछित्त
चित्रित दीवार मध्य
कतेक घमण्डसँ छल स्थित
जाहिमे देखि आननकँ
अपनाकँ धन्य बुझैत छल-रूपधनी
से भ' गेल आब उपेक्षित
पाएर बचा क' चल' पड़त ओहिठाम
किन्तु एकरा प्रत्येक खण्डमे
बनि रहल प्रतिबिम्ब
कोनहुँमे मात्र आँखि
कोनहुमे मात्र कपार
विचित्र वीभत्स
ओ कहियो नहि सोचने छल-
एहन अवसान होएत हमर।

मिलन बाध

नील गगनमे भेल मगन
उड़ैत पाँखि संगहि आँखि
जोड़िक सँग नव उमंग
मिलन हेतु आकुल
जेना पियाससँ भेल व्याकुल
अछि पूर्ण आस मिटत संचित पियास
करैत बात उतरल साथ
बनल घर पल्लव तर
तरूक डारिपर
दूइ हृदय मिलत नव फूल खिलत
किन्तु व्याधाकेँ कनहा आँखि
रहल अछि ताकि
क्षुधाक पहिरिने खोल
नाचैत नेत्र गोल-गोल
भ' रहल तैयार-प्रपंची हथियार
आर चलाएत तेज तीर
देत देहमे पीर
तइसँ ओ नहि डरत
परेम कहियो नहि मरत।

शिष्ट-अशिष्ट

भीड़ मध्य दसो अँगुरी जोड़ैत
टेढ़ भऽ गेल हमर हड्डी
कियो दैत अछि- आर्शीवाद
कियो नमस्कार
किनको मुँहसँ निकलैत अछि
''नहि चीन्हलहुँ....''
तब बिधुआ जाइत अछि
हमर मुँह
परन्तु गोटेक तँ
घुरियो नहि तकैत अछि
हमरा जुटल हाथ दिशि
मन अनोन भऽ जाइत अछि
लागैत अछि जेना-
नङटे ठाढ़ छी
आ लोक सभ चला रहल अछि
आँखिक तीर
ताहि कारणे छोड़ि देलहुँ
हथजोरी करब आ सिर झुकाएब
आब चलि देने छी- सोझहिं
गुम्मा बनि।

ढहैत महल

नहि जोरगर बिहाड़ि
नहि झितिकम्प भेल
शायद आधार छल
कमजोर भेल
तैँ ई विश्वासक महल
ढनमना कऽ गिर पड़ल
खण्ड-खण्ड भऽ गेल- रँगीन दिवार
जेकरा ठाढ़ करबामे
कतेक अमूल्य काल-छल नष्ट भेल
उतुंग गिरि सन-जर्जर भवनकेँ
खसलाक भयंकर शब्दसँ
चिड़इ-चुनमुनी उड़ि गेल
बिहाड़ि सन लगैछ
उड़ैत धूरा
मध्य बनि रहल-नव आकृति
ओ सभटा वृति
जेकरा बरिसों पहिले
छोड़ि-छोड़ि
मातल छलहुँ निन्नमे।

अश्रुधार

हमरा प्रेयसीक नैनसँ
बहैत रहैत अछि
हरक्षण नोरक- नदी
आ ओहि अश्रुजलमे
लोक करैत अछि- अवगाहन
केकरो ठण्ढ़ा आर केकरो होइत अछि
गर्मानुभूति
कियो कहैत छथि- वाह-वाह
कियो कहैत छथि- बड़ड अधलाह
किन्तु आन्हर-बहीर हमरा संगिनीकेँ
नहि छैन्हि परवाह
हुनक नोर नि:सृत
होइते रहैत अछि
किन्तु किछु दिनसँ ई लादने अछि- चुप्पी
शाइत सधि गेलन्हि-नोर
वा कऽ रहल अछि
अक्षय अश्रु संग्रह।

नाचैत भूत

कतेक दिनसँ ई भूत
नाचि रहल अछि
हमरा माथपर
चूसि रहल अछि
हमरा शोणितकेँ
भऽ गेलहुँ भूतचढ्ढू
तइयो नहि छोड़ैत अछि ई निखढ्ढू
बड़का-बड़का ओझा-गुणी
कएलक प्रयास
किन्तु ई नहि पड़ाइत अछि
केहेन बेसुरा अछि- एकर नाचब
राग-ताल विहीन
लगैत अछि-जेना
पीट रहल अछि-कियो
फूटल टीनकेँ
''झन-झनाक-झन''
कुनमुना उठैत अछि हमर मन
एहि भंयकर शब्दसँ
करैत अछि दरद
कएकबेर कएलहुँ यत्न
भूतकेँ खसेबाक
परन्तु खसि पड़ैत छी- अपनहि
ई धऽ लेने अछि गहिया कऽ
हमरा कपारक केशकेँ
कसने अछि सवारी
तँ आब हम कऽ रहल छी
शीर्षासन
जँ नहि उतरता ई भूत
तँ कऽ देबैक थकचुन्ना
अपनहि शरीरक भारसँ।

माय

(क)

दोसरोक माय
अछि हमरे माय
तँ कि यौ भाय
अपना मायकेँ बिसरि जाइ
जे करौलक अमृत-पान
भेलहुँ जवान देशक शान
ओहिठामसँ ससरि जाइ
मायक सिनेहकेँ बिसरि जाइ
कि यौ भाय।

(ख)

मैथिलीक अछि असीम भंडार
एहि बातकेँ हम सोचि ली
घर भरल हो जखन
दोसरासँ किएक पैंच ली
राखि संतोष करी उपाय
कि यौ भाय।

(ग)

नहि होइ खिन्न
नहि लिअ पड़ए ऋृण
करू कोनो उपाय
हे मैथिली माय
भऽ जाए हमरो अभ्युदय
कि यौ भाय।

यत्न

हरियर पातक मध्य पीयर फल
देखतहिं मन ललचागेल
ओकर सरस स्वादक अनुभव
जगा देलक- तृष्णाक आिग
मारय लगलहुँ- छड़पनियाँ
करए लगलहुँ- उछल-पूछल
तोड़बाक हेतु
किन्तु डारिमे हाथ स्पर्श भेलासँ पूर्वे
खैंच लैत अछि-नीचाँ
टाँग पकरि- धरती
ठाँहि दऽ लगैत अछि- चोट
ऍंड़ीमे
यत्नपर यत्न कऽ रहल छी
परन्तु फल नहि तोड़ि पाबैत छी
लगैत अछि जेना
भुकुर-भुकुर तकैत
हमरा विफलतापर
चला रहल हो- व्यंग्य-बाण ई वृक्ष
लाज नहि होइत छन्हि- हिनका
हमरे रोपल-पैघ भेलापर
देखा रहल अछि- हमरे ठेसी
किन्तु बसात अछि निशब्द मारने
दऽ रहल अछि- पूर्वाभास
उठल जोरगर-आन्हड़-बिहाड़ि
निश्चय टूटत-ई फल।

बघनखा

कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
जतए देखू ततए बघनखा
पत्नीक आँखिमे नोर भरल
ताहिमे सँ खसल बघनखा
कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
रोटी तोड़ि मुँहमे लेलहुँ
पड़ल दाँत तर बघनखा
कतउ किछु बचल सुच्चा
वस्त्र झाड़ि कऽ पहिरैत काल
भट्ट दऽ खसल बघनखा
कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
सुतल छलहुँ घरमे
आकि चारसँ चमकैत
झनाक दऽ खसल बघनखा
कतउ नहि किछो बचल सुच्चा
मित्रक बड़का कुरतामे
बटनक बदला बघनखा
कतउ नहि किछु बचल सुच्चा
वएह देखि रहल छी सर्वत्र
कि हमर आँखिए
बनि गेल बघनखा?

रंगक खोज

फाटल वस्त्रकेँ सीबैत
चौन्हिया गेल चक्षु
धड़फड़ीमे गड़ि जाइत अछि
सुइया
अपनहि हाथमे
आ चाटि लैत छी
स्व रक्तकेँ
जाहिसँ लगबैत छी- अनुमान
दोसर शोणितक स्वादकेँ
बिसरि ओहि पीड़ाकेँ
पुन: लगबैत छी चेफड़ीपर चेफड़ी
बदलि गेल वस्त्रक रँग
भऽ गेल अनचिन्हार
लगैत अछि जेना
कतेको रँगक झंडा
टाँगल हो एकेठाम
तइओ चला रहल छी काज
मुदा भऽ जाइत अछि लाज
कहियोकाल- कतेको जोड़ी आँखिक
व्यंग्यात्मक तीरसँ
भऽ जाइत बिद्ध
तैं घरे मध्य नुकाएल रहब
हमरा लगैत अछि नीक
किन्तु पेटक आगि
नहि रहए दैत अछि- निचेन
अवश भऽ कऽ निकलि गेल छी
लाल रँगक खोजमे
जाहिमे रँगे देलासँ
चितकबरा खण्ड सभ
भऽ जाइत एक्के रँग
तबे टूटत
हमर हीन भावनाक जाल।

कंटकमय नवनीत

हमरा सम्पूर्ण शरीरमे
जनमि गेल अछि
पैघ-पैघ बिखाह काँट
लोक सभ पड़ा जाइत अछि
हमरा देखतहि
किनको नहि छूबि सकैत छी- सिनेहसँ
स्पर्श करैत छी- जिनका एकोबेर
ओ बोमिया उठैत अछि
प्रेमभाव बनि जाइत अछि- बैरीभाव
अपनहुँ एक अंग दोसरसँ
होइत अछि स्पर्श तँ
मन सिहरि उठैत अछि
कऽ लएतहुँ- आत्मघात
किन्तु सेहो नहि कऽ पाबैत छी
जिनगीक जहर
घोरि-घोरि पीबि रहल छी
बचल अछि एक अंग
निष्कंटक नवनीत सन
धुकधुककाइत छातीमे
तकरहि देखैत जीवि रह छी
आसहिपर।

लाज

निरलजकेँ ने लाज पेट भरलासँ काज
देखि रहल छी मिताकेँ किरदानी
बदलि गेल ओकर चालि आर-वाणी
बरदाइससँ बाहर कऽ रहल- मनमानी
लगौलक एहेन फानी
जे लड़ि रहल छी दुनू परानी
परेमक गाछ सुखा गेल
मन पुरा दुखा गेल-
अपन लाभ अनकर हानि
की करए चाहै छल से नहि जानि
तइयो इमानदारीक पहिरने खोल
बजैत अछि नीक नीक बोल
आइ हम एकर खोलि देबै पोल
दसगोटेमे कोना ठाढ़ अछि लफंगा
कऽ देबै एखने नंगा
खिसिया कऽ बढ़लहुँ ओकरा दिश
कऽ देबै नाँगट- ऍंड़ीसँ देबै पीस
हाय रौ तोरी ई कोन बात
सभ भऽ गेलाह एके साथ
ठिठिया कऽ सभ हँसि रहल अछि
हमरेपर व्यंग्य कसि रहल अछि
सभ बुझौलक तब असली बातकेँ जानि
सोचि विचारि लेलहुँ मानि
नहि होइत अछि नीक बेसी रिश
सोचैत देखलहुँ अपना देह दिश
गुदरी लटकल बनल छी भिखमंगा
हम तँ अपनहि छी पूरा नंगा
भीतरसँ सभटा गप्प जानि
लाजे भऽ गेलहुँ पानि-पानि।

मिलन-बिछुड़न

अहाँसँ होइत अछि जखन मिलन
बहए लगैत अछि मलय पवन- सन-सन
झड़ए लगैत अछि मेघसँ छोट-छोट बून
फुला जाइत अछि मनक प्रसून
गाबए लगैत अछि भ्रमर- गुन-गुन
चिड़ैक चहक मादक-महक
प्रसन्नताक- दमक
मिलैत अछि पूर्ण शांति आर सुख
पड़ा जाइत अछि दुख
किन्तु होइत अछि जखन बिछुड़न
दुखसँ भरि जाइत अछि तन-मन
सूखि जाइत अछि मनक फूल
जेना रहि रहि गड़ैत अछि शूल
मनमे भरए लगैत रोष
बेचैनी आओर असंतोष
हे सखी- करू कोनो उपाय
जे दुनूसँ ऊपर उठि जाय
मिल जाए त्राण
दुनू भऽ जाए समान।

परिवारक गाछ

रौद रहै तीखर
गाछ लने कपारपर
घामसँ नहाएल स्त्री
जा रहल छलीह सड़कपर
कथीक गाछ छी ई केहेन फड़त
एतेक रौदमे ई नइ मरत
हम गाछक नाम पुछलौं बारम्बार
ओ कहलक एकर नाम छि परिवार
एहिमे शिक्षाक फल ड़त
खाएत बाल-बच्चा तँज्ञानक इजोत करत
हमरे परिश्रमसँ ई हेशाल
एकरा नहि खा सकत कोनो काल
पालि-पोसि कऽ बनाएब बलवान
बढ़तै सबहक मान-सम्मान
जेना कऽ पटेबै तेहने फड़त
जँ कष्टमे रहबै तँ गिर पड़त
हम मुँह दिश अकबका कऽ तकलहुँ
पूछलिऐ-अहाँक बात नहि बुझि सकलहुँ
सुनि हमर वाणी
ओ बुझलक हमरा अज्ञानी।

त्रिशंकु

आँखिपर लगल अछि निन्नक झँपना
देखि रहल छी डेराओन सपना
घुरि कऽ आबि गेल छी गाम
लादने समान पत्नी अछि वाम
सपनोमे यादे अछि ओ दिन
एतेक दुख कोना कटलो गिन-गिन
दस मास पूर्व भागल रहि प्रेमिकाक संग
सामाजिक नियमकेँ कऽ देलिऐक भंग
शहरमे मित्र करैत छल काम
दुनू गोटे पहुँचलहुँ ओहिठाम
एकान्तमे मित्र बैठौलक साथ
समझाबए लागल सभ बात-

''उपरसँ जातिक टंटा
आर लगतह पुलिसक डंटा
अनकर बेटी रखने सँग
पकड़ि कऽ तोड़ि देतह अंग-अंग
गाबले गीतकेँ आब नहि गाबह
कोर्ट जा जल्दी वियाह कऽ आबह
कएलहुँ अन्तर्जातीय वियाह
किछु लोक कहलक वाह-वाह
किछु कहलक बड़ड अधलाह
छोटकामे कएलक वियाह
खादिमे धसि गेलाह
काटि दस मासक प्रवास
पहुँचल छी घरक पास
पत्नी संगे ठाढ़ छी गोसाँइ दुआरिक आगा
पछुआरक गाछपर काँए-काँए करैत अछि कागा

हमरा बापक मुइला भऽ गेल साल दु साल
फेर ई कतएसँ पहुँचि गेला तोड़ैत ताल
देखैत छी गोसाउनिक अगाड़ीमे
नीर भरल अछि थारीमे
जाहिमे धड़ विहीन बाबूक सिर नाचि रहल अछि
क्रोधमे गलगला कऽ बाँचि रहल अछि-
"ओहिठाम ठाढ़ रहू एमहर आबि नहि सकैत छी
कुलदेवतासँ असीरवाद पाबि नहि सकैत छी
जखन क्रोधसँ देवता जेतह जागि
धन-जन आ घरमे लगतह आगि
मुँह लटकौने केकर तकैत छहक राह
उनटे पाएर घुरि जाह
गोहराबह देवता-पित्तरकेँ
मांगह सभसँ माफी
एतबेक नहि छह काफी
जा करऽ सात बेर गंगा स्नान
बचाबह कुलक मान
एहि कुलच्छनीक छोड़ि आपस आउ
यौ बउआ अपन प्राण बचाउ"

एकटा पाएर बाहर एकटा अछि घर
अस्सी मन भारसँ दवा रहल छी तरेतर
बाप दिश तकबाक नहि अछि साहस
पत्नीक आँखिमे झाँकि रहल छी
डरे थर-थर काँपि रहल छी
हेऔ एहिसँ नीक छूटि जाइत प्राण
तर धरती नहि उपर आसमान
मध्य भागमे अटकि गेल छी
नहि कऽ सकैत छी प्रेम
त्रिशंकु जकाँ लटकि गेल छी
किछु नहि फुराइत अछि की करबै आब

पत्नीकेँ की देबै जवाब
नहि एहिपार नहि ओहिपार
धऽ लेने अछि जड़ैया बोखार
एखनहुँ नहि सपना छोड़ि रहल अछि
कंठ पकड़ि कऽ तोड़ि रहल अछि।

अनमोल जिनगी

''हारल जीनगी जीएब ताहिसँ नीक
रणक्षेत्रमे मरि जाएब से अिछ ठीक''
यौ मित्त अहाँक ई गप्प हमरा नहि लगल नीक
जीनगीक संगे रहतैक हारि आर जीत
कखनहुँ कानैत अछि लोग कखनहुँ गाबैत अछि गीत
किछुकाल करैत अछि झगड़ा किछुकाल करैत अछि प्रीत
जँ भऽ जाए जीनगीक युद्धमे हारि
फेरसँ लिअ अपनाकेँ सम्हारि
छोड़ि शोक मनकेँ राखि नीरोग
मृत्युसँ नीक जीवनक सदुपयोग
करबाक चाही समाज आ राष्ट्रक हित
यएह तँ अछि जीवनक मूल्य यौ मित्त
पकड़ि लिअ कोनो सुन्नर राह
सभ कहत वाह-वाह
बाजू हरपल मधुर बोल
जीनगी अछि अनमोल
बढ़ाउ संसारसँ मेलजोल
बढ़ि जाएत जीवन मोल!

मुनियाँक चिन्ता

(बाल कविता)

“बच्चा जनमि गेल
बेटा भेल”
सुनतहि घर खुशीसँ भरि गेल
सौंसे टोल खबरि पसरि गेल
बढ़ए लगल उछाह
कहलक लोग-वाह-वाह
मुनियाँ अछि लछमिनियाँ
तब ने एकरापर सँ जनमल छौंड़ा
हे गै तू किएक धेने छँ दादीक कोरा
मुनियाँ टक-टक ताकि रहल अछि
आ मने-मन आँकि रहल अछि
दादी बजल-की लेबँ बाज
करए दे हमरा काज
खसौने घाड़
कनैत छह जार-बेजार
यएह करतह रक्षिया
जिनगीक उठौतह भार
धेने छह हमर गात
ई तँ छै खुशीक बात
जनमल तोरा भाए
कतेक खुशी छह तोहर माए
दादी, सबटा जानै छी
हम ओइ लए नहि कानै छी
चिन्ता अछि हमरा आब के कोराकँ लेत
दूधो माए पिबऽ नहि देत
आँइ,
सभ हँसल आ मुनियाँ फँसल।

कथीक गाछ

(बाल कविता)

चारिटा छौंड़ा छल गाछ तर फनैत
जिद लगौने डरिकँ गनैत
पहुँचल पाँचम- हे रौ की गनै छँ
ई कथीक गाछ छिऐ से जनै छँ?
सभ भेल अवाक
अपन जमौलक धाक
सुनने रहि ई गाछ छिऐ अनचिन्हार
जेकरा चिन्हलहुँ से चिन्हार
नहि चिन्हलहुँ तँ भेल अनचिन्हार
कहैत माथ उठौलक तानि
एकटा छौंड़ा बजल फानि
तहूँ तँ नहि रहल छँ जानि
अपनहुँ ठकाइत छँ
आ दोसरोकँ ठकै छिही
टेढ़ी देखा संतोख करै छी
झूठक कऽ रहल छी परचार
दुर-छी दुर-छी करतौ संसार
अनजानकँ करैक चाही जनैक प्रयास
नहि छोड़ैक चाही आस
पहिले बढ़ाले अपन गियान
तब बाजबैं तँ बढ़तउ मान।

नेहाइपर लेखनी

कान्हपर अंगोछा लए
ठमकल छी कजरी लागल
एहि चबूतरा घाटपर
सम्मुख अछि पीड़ा जल प्रसार।
सहरि-सहरि जोंक जाहिमे
कऽ रहल अछि
उन्मुक्त जल विहार।
एहि पीड़ा जलसँ
नहि जानि कहिया भेटत मुक्ति
कहिया धुआएत
गातक तहियाएल मलिनता
जाधरि ई रहत जमल
गन्हाइत पीड़ा-जल
खण्डित नहि भऽ सकत
जोंकक जल बिहार
छी डेराएल
अंग-अंगपर
जोंक दंश अनुभव कए
परन्च ई तँ अछि
भीरूपन
आत्मघाती जड़ता।
तोड़ए पड़त आब
भुतहा कुल ओ मोहारकेँ
कोड़ए पड़त आब
जल निकास
बहाबऽ पड़त एहि
गन्हाइत जलकेँ
भरए लेल पोखरिकेँ

नव वर्षाक जीवनसँ
जोंक विहीन अमृतसँ
तखैने भऽ सकत पुण्य-स्नान
ताहि कारणे आइ
हम लेखनीकेँ राखि देलहुँ
निर्मम नेहाइपर
बनाबऽ लेल
असि, तीक्ष्ण कोदारि
काटऽ लेल
भुतहा मोहारकेँ
करऽ लेल स्वर्गिक स्नान।

झगड़लगौना पिशाच

ई झगड़लगौना पिशाच
नै आबए देलक अपनापर आँच
रखने सभसँ मेल
खेलैत रहल झाँपल खेल
जेकरा संगे करै ई कनफुसकी
तेकरा मुखसँ उड़ि जाइत मुसकी
ओ करै छल रगड़ा
ताकऽ लगै छल झगड़ा
एको घर नै छोड़ै छल लड़ैया बोखार
एकटा रोकनाइ भऽ गेल छल बेसम्हार
फैला रहल छल दोग-दोग
भऽ गेल हो जेना संक्रामक रोग
घर-घर छीटै छल झगड़ाक बीया
झगड़ाक बाद फटै सबहक हीया
नव शक्ति नित रोज
करए लागल बेमारीक खोज
धरा गेल सीपपर आइ
भगै केर नै रहल कोनो उपाए
''एना नै करियौ छान-बान्ह
एतेक नै करियौ अपमान''
किछु हँसैत किछु रहल कानि
मुँह लटकौने पिशाच सभ किछु जानि
कानि-कानि पएर लेलक छानि।

गाछक बलिदान

गाछसँ घेरल चारूभर
मध्यमे छल दूटा घर
चारूभरक गाछ झड़कि गेल
तैयो आगि नै बहरा भेल
ईश्वर केहेन रचना रचि गेल
दूटा घर जरल सौंसे गाम बचि गेल
तोरेटा घर भेलह बरबाद
भगवानकेँ दहक धन्यवाद
केकर कऽ रहल छी यशोगान
पहिले दिऔ गाछक मान
तब करब ईश्वरक सम्मान
तँए बचल कतेकोक धन आ जान
गाछ नै भेल पाछ
नै तँ सौंसे गाममे आगि करैत नाँच
यएह गप्प छै साँच
हमहूँ नै हएब पाछु
फेर रोपब दू-चारि गाछ।

हेराएल

हे यौ, हम हेरा गेल छी
अन्हारमे घेरा गेल छी
कोनो बाट नै भेटैत अछि
बौआए गेल छी
औआए गेल छी
ऐ गामक की नाम छिऐ यौ
घुरिया रहल छी चारूभर
कोन घर छिऐ हमर
भटकि रहल छी दर-दर
नै भेट रहल अछि घर
हे यौ कोन दुआरि अछि हमर
सुनै छी फटकार भरल स्वर
भीतर काँपि उठल थर-थर
"बड़ड बजै छह चर-चर
की नाम छिअ तोहर"
बिसरल छलहुँ गाम
आब तँ बिसरि गेलहुँ नाम
कहए पड़त हम के छी
स्वयं जानए पड़त हम जे छी
नै तँ जिनगी भऽ जाएत अकारथ
नै भेटत परमारथ।

गाछक हिस्सा

बिरिछपर कुड़हरि दन-दना रहल अछि
दुनू भाँइ भन-भना रहल अछि
यएह गाछ छिऐ झगड़ाक जड़ि
एकरा देबै आइये काटि
सभ किछ भए गेल भिन्ने
तँ एकरो लेबै आइये बाँटि
लगमे पहुँचल संच-मंच
बुझबए लगल गामक सरपंच
बैसू हकरू दुनू भाय
नहि हएत झगड़ा अछि उपाय
गाछमे छै दूटा फेंर
नहि लाबए पड़त तरजू-सेर
हिस्सामे भेल एक-एकटा मोटका डारि
भायक परेममे किएक पाड़ै छी दरारि
एकोटा गाछ रोपल भेल
किएक करै छी एहेन अधलाह खेल
जाहिपर जिनगीक आस
चलैत अछि साँस
तकरा कऽ रहल छी विनाश
जएह देने अछि कपारपर छाँह
तकरे कटै छी वाह-वाह
ई करम अहाँसँ भऽ रहल अनुचित
जे दऽ रहल जिनगी
तकरे सँगे एहेन अहित
करबै गाछक सेवा

भेटत सुन्दर मेवा
भेटत सुन्दर फल
एहिसँ बढ़त शरीर आ मनक बल
पंचक गप्प सुनि दुनू भाँइ कहलक
घर चल।

लाल ज्योति

गन्तव्य दिश अग्रसर होइत
धप्प दऽ हम खसि पड़लहुँ
अनभुआर कुपमे
जे अछि बरिसों पुरान, सुखल
जलक नामपर
फाटल दरारि
राक्षसक मुँह सन
सधन-तमसँ भल छी भयभीत
अएबाक हेतु-ऊपर
कऽ रहल छी- यत्न पर यत्न
किन्तु सर्प सन ससरि ससरि खसैत छी
पुन: ओहिठाम
मकड़ाक जाल सभ
लटपटा रहल अछि- माथमे
आवेश वश फेंकि रहल छी माँटिक ढेपा
परन्तु ओहो लगैत अछि
ठाँहि दऽ अपनहि कपारपर
हथोड़ि रहल छी-नव राह
तखनहि तीक्ष्ण लाल प्रकाशमे
चौन्हिया जाइत अछि-चक्षु
कियो सहृदय साहस कऽ
देखा रहल अछि- मार्ग
बढ़ि रहल छी आब
शनै: शनै:
ओहि बिन्दु दिश।

बीखक घैल

कतेको बरख पुरान
एहि बीखक घैलमे
तृण भरि छेद मात्र
बून-बून चुबैत
बीखसँ
भऽ रहल अछि
विषाक्त वसुन्धरा
भष्म भऽ गेल
मनवोचित गुण
तइयो तीब्र गतिसँ
आप्लावित करैत
खोजि रहल अछि
नव-नव आहार
प्राणी सभ अछि पड़ा रहल
सुड़डाह करैत अछि बढ़ि रहल
बीखक बाढ़ि
सभ अछि सशंक
खोजि रहल अछि निर्विध्न स्थान
पड़ाइत-पड़ाइत भेल अपस्याँत
किन्तु आब नहि होएत घात
बढ़ि रहल दूटा सशक्त हाथ
अहर्निश
ओहि कुम्भ दिश।

पत्रोत्तर

अहाँक उपरागसँ बेधल अछि गतर-गतर
तैं दऽ रहल छी पत्रोत्तर
कतेक कएलहुँ परिश्रम
बनलहुँ निरलज टूटल धरम
तब बनेलहुँ सोनाक घर
सबकुछ सधि गेल भेलहुँ फक्कड़
मनोरथ तँ पूरा भेल
किन्तु यएह आइ जहल भऽ गेल
अहाँ लगसँ एतऽ धरि
जेना लगल अछि कोनो अदृश्य कड़ी
हवाक सँग अहाँक गन्ध आबि रहल अछि
से स्वर संगीत बनि गाबि रहल अछि
अहाँ अन्त: सँ सोर पाड़ै छी
हम अपना हृदयकैं तरे-तर मारै छी
बीतैत अछि साल बीतैत मास
एहि जेलसँ निकलैक कऽ रहल छी प्रयास
आबैए जाड़ तँ अहाँ बिनु लगैए अन्हाड़
देहपर पड़ैए बून याद पाड़ैए अहाँक गुन-गुन
हवा बहै जब गरम लागै फूटल हमर करम
अबै जब बसन्त हमर हृदय करैत अछि हन्त
तइओ हम केहेन छी कंत
अहाँक बिसरि बनल छी संत
खोज कएलहुँ हम असली
आब बनल ओ नकली
असल परेम मुँह फेरि नहि सकैत अछि

ओकरा कियो धेर नहि सकैत अछि
नहि जानलहुँ तँ जानब
आब नहि हम मानब
एक-एक ईंटाकेँ फोड़ब
एहि स्वर्ण जेलकेँ तोड़ब
अन्तरमे मिलन पियास करै अनघोल
स्वर्णक होइत अछि बहुत मोल
पर परेमक मोल अमोल।

अन्हारक खेल

ओहिठाम भऽ रहल छलै
एकटा हास्यास्पद खेल
एकत्रित दर्शकमे छलै
तत्कालीन बड़ड मेल
एकबेर आँखि मटकेलहुँ
कनेक धियान भटकेलहुँ
खेलाड़ी खेल आब की करता
देखैत छी ओहिठाम ठाढ़ छै भाषणकर्ता
भाषण झाड़ि रहल अछि
अमृत वाणी ढारि रहल अछि
छलिया भाषण
नहि दैत छलै राशन
लोग पीबै छलै अश्वासन
नहि सुनै गेल देखै लेल
गेल छलै लोग
सेहो भेल अभोग
करऽ लगल आपसी रगड़ा
थप्पर-मुक्का आ झगड़ा

पुछए चाहलक भाषणक अता-पत्ता
आकि ओहो भऽ गेल निपत्ता
ओहि जगहपर भेल ठाढ़
सौंसे मनुक्खक हाड़
जहिमे सँ निकलि रहल छूछे अन्हार
डूबि गेल सभ ओहिमे कानए जार-जार

औनाए कऽ खसए बारम्बार
ओ अन्हार सबहक देहकेँ बना देलक हाड़े-हाड़
एक दोसराकेँ देखि सभ भऽ रहल भयभीत
बढ़बऽ पड़त एकताक गीत
मारऽ पड़त छड़पनियाँ
काटऽ पड़त गुड़कुनियाँ
आगूमे छै इजोत
जे दऽ रहल छै नोत
लगबऽ पड़त कोनो ब्योंत।

नाचक बिखाद

लोग मनहि मन करै छल जाँच
हम करै छलहुँ नाँगटे नाच
आँखि देखैत छल
मुँह हँसैत छल
जखैन लोग केलक दुर छी-दुर छी
धियान गेल तब अपना दिश
अपने नाँगट देह देखि
मोनमे आबि गेल रिश
कहैत छी आब-लाउ कोनो नुआँ
होइत अछि लाज
बजैत अछि समाज-
“अलगे रहू अहाँसँ नहि अछि कोनो काज”
एहूसँ बेसी घिना जाएत
स्वजन-परिजन जब सोझा आएत
गप्प चारूभर गिन-गिना जाएत
हेओ कएलहुँ जेना
नहि करब एना
नाचैत-नाचैत कखनहुँ काल
नहि रहै छै सुधि-बुधि बिगैड़ जाइछै चाल
एहो तँ छिऐ एकटा नवका ताल
किछ लोक तँ कहै छै एकरो कमाल
ओमहर लोगकेँ भले लगो नीक ई नाच
एहिठाम नहि सोहाइत छै ई गप्प अछि साँच

एतुक्का लेल नहि छै अनुकूल ई नाच
हे यौ भाय
करू कोनो उपाय।

आँखिक प्रतीक्षा

बन्न अछि अहाँक आँखि
जेना नान्हिटा चिड़इ पसारने पाँखि
आगुमे दुनू ठेहुनकेँ मोड़ने
संगहि दुनू हाथ जोड़ने
हम टक-टकी लगा कऽ रहल छी ताकि
कखैन खुगत अहाँक आँखि
एकबेर जाहिमे लेब हम झाँकि
हमरासँ की भेल भूल
चढ़ा रहल छी मनक फूल
अधरतिया भऽ गेल साइत
शरद पूर्णिमाक ई राति
प्रकृतिपर झहरैत अछि चानी
मधुर रस घोरैत कोइलीक वाणी
मन्द-मन्द सिहकैत बसात
केना रहब अहाँसँ भऽ कात
एकोबेर तँ बोलू
आबो आँखि खोलू
निकलए नेह वा धिक्कार
हमरा दुनू अछि स्वीकार
देखबाक अछि उत्कट इच्छा
हम करैत रहब जिनगी भरि प्रतीक्षा।